जनवरी–जून 2024

रेवान्त

साहित्य और संस्कृति की त्रैमासिक

मूल्य : सत्तर रुपये मात्र

नचिकेता

(1945-2023)

मुझे विश्वास है
एक दिन बदल जाएगी ये दुनिया
एक दिन बदल जाएगी यह धरती
एक दिन बदल जाएगा आकाश
एक दिन पिस्तौलों से निकलेंगे फूल
एक दिन मुरझा जाएँगी हत्यारी तोपें
एक दिन ठंडे पड़ जाएँगे चीथड़े उड़ाते बम
एक दिन सरहदें मिटा दी जाएँगी नक्शों से
एक दिन लकीरें मिटा दी जाएँगी हथेलियों से
एक दिन दीवारें ढहा दी जाएँगी घरों से
एक दिन जी भरकर खिलखिलाएँगी
सभी खामोश स्त्रियाँ

मैं इन्हीं विश्वासों के साथ जिऊँगा
और जब तक जिऊँगा
अपने कहे और सोचे को तामीर करूँगा
ताकि उसके बाद मेरे और आपके बच्चे
कुछ नई ग़फ़लतों के साथ
कुछ नई-सी उम्मीदों के लिए जिएँ
और कुछ नए विश्वासों के साथ मरें
हमसे कुछ ज्यादा जिएँ
और, हमसे कुछ कम मरें!

('मेरा यूटोपिया' कविता का अंश)

मलय

(1929-2024)

मैं इतनी जल्दी
कैसे छोड़ दूँ यह दुनिया!

अभी सूखती नदियों की तरह
उदास खड़ी हैं बहनें
भाई फटे गमछे से बाँधे है कान!
और हिमालय बर्फ़ से जमा देना चाहता है
शरीर की सारी गंगोत्रियाँ

मेरी माँ बुहारती है ज़िन्दगी
साँसे जिस्म की कौंधती बिजली की तरह
चीरती हैं भाषा तक
शब्द फूटते फुग्गों की तरह
चिथड़ों में उड़ जाते
रोज़-रोज़ होती मौत भूखे बच्चे की
सीने में लगती बेकारी की गोली से भाई काँखता नहीं!

मैं चीख़ता नहीं क्यों?
पुकारता हूँ मेरा गाँव मेरा मुहल्ला
एक हिमालय से ऊँची चढ़ाई
चढ़ना है मुझे
साथ दोगे क्या?
कटोरी के पानी के पार
जाना है हमें
मैं छोड़ नहीं सकता ये दुनिया

('कैसे छोड़ दूँ यह दुनिया' का अंश)

रेवान्त

साहित्य एवं संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 41

जनवरी-जून 2024

प्रकाशक

ऐश्वर्या सिन्हा

संरक्षक

निर्भय नारायण गुप्ता

नीमा पन्त

प्रधान संपादक

कौशल किशोर

संपादक

डॉ. अनीता श्रीवास्तव

सलाहकार

सरोज सिंह, रोली शंकर,

कुसुम वर्मा, नीरजा शुक्ला एवं नम्रता मिश्र

उप संपादक

विमल किशोर, भावना मौर्य,

राजेश मेहरोत्रा एवं वर्षा श्रीवास्तव

कानूनी सलाहाकार

नीलम सिंह 'एडवोकेट'

संपादकीय कार्यालय

फ्लैट नं. 88, सी-ब्लाक, लेखराज नगीना,

चर्च रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

मोबाईल : 9839356438, 9621691915

E-mail : anitasrivastava249@gmail.com

kaushalsil.2008@gmail.com

मोबाईल : 8400208031

मूल्य : 70:00

वार्षिक सदस्यता-400 रुपये, पांच वर्ष-1500 रुपये

आजीवन सदस्यता : 5000

संस्थाओं के लिए सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 500 रुपये, पांच वर्ष : 2000 रुपये

आजीवन : 6000 रुपये

(मनीआर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट द्वारा समस्त भुगतान 'रेवान्त पत्रिका' के नाम से लिये जायेंगे)

प्रकाशित रचनाओं के विचार से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

इस बार...

- संपादकीय
  - कारवां चलता रहेगा, बढ़ता रहेगा..... 2
  - 'रेवान्त' का यह अंक' 4
- स्मृति
  - साहित्य का ध्रुव तारा : सुरजीत पात्तर : गुरबख्श सिंह मोंगा 5
  - दुर्लभ है चौथीराम बनना! : डॉ अवन्तिका सिंह 7
- जन्मशती
  - व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई : चन्द्रेश्वर 9
  - हरिशंकर परसाई की कहानी : सती का बेटा 12
- कविताएँ
  - राजवंती मान, उषा राय, भारती संजीव श्रीवास्तव, निवेदिता झा और पूर्णिमा मौर्य 14
- विशेष
  - रामकुमार कृषक : गीतों से ग़ज़लों तक : महेश दर्पण 22
- ग़ज़लें
  - रामकुमार कृषक और बी आर विप्लवी 29
- आलेख
  - हिंदी ग़ज़ल के जनसरोकार : डॉ जीवन सिंह 32
  - वसंत की आगवानी का कवि नरेन्द्र : बलभद्र 37
- कहानी
  - फ्लैश बैक : अतुल सिन्हा 40
  - क़ाबिल -ए-तारीफ़ राजा : अनूप मणि त्रिपाठी 54
- काल से होड़
  - सुधा उपाध्याय, विजय राय और नवनीत पाण्डे की कविताएं 44
- आधी आबादी
  - 'अम्मा, जिन्होंने हमें गढ़ा और हमने भी उन्हें' : सीमा आजाद 50
- कविताएं
  - शैलेश पंडित, प्रशांत जैन और उमेश पंकज 56
- टिप्पणी
  - प्रेमचंद और हजारी प्रसाद द्विवेदी से कुछ सीखें : यशवंत सिंह 62
- रपट
  - टोरटों में कविता की एक शाम : नीरजा शुक्ला 64
- आवरण : डॉ किशोर अग्रवाल
- शब्द संयोजन : मनोज श्रीवास्तव

कारवां चलता रहेगा...बढ़ता रहेगा

आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास है। इसके पीछे जन सरोकार और जनप्रतिबद्धता की भूमिका है। हमारे यहां पत्रकारिता का विकास राष्ट्रीय आंदोलन के साथ हुआ। उसके सामने देश को आजाद कराने का लक्ष्य था। बड़े साहित्यकारों ने पत्रकारिता को आगे बढ़ाने और जनमाध्यम बनाने का काम किया। एक तरफ भारतेंदु, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, यशपाल, शिव वर्मा जैसे अनेकानेक साहित्यकारों की भूमिका थी, तो वहीं गणेश शंकर विद्यार्थी, महात्मा गांधी, नेहरू, डा अम्बेडकर, मौलाना आजाद, तिलक आदि ने पत्र-पत्रिकाओं को राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बनाया। कविवचन सुधा, सरस्वती, हंस, चांद, माधुरी, मतवाला, प्रताप, नया पथ, विकल्प जैसी असंख्य पत्र-पत्रिकाएं इस दौर में निकलीं। यह पत्रकारिता मूल्य आधारित थीं। यहां व्यक्तिगत स्वार्थ गौण था, सामाजिक और राष्ट्रीय स्वार्थ प्रधान था। आजादी के बाद भी एक हद तक तथा कुछ समय तक इन मूल्यों का निर्वहन हुआ।

आजादी के बाद पश्चिम की नकल पर साहित्य में प्रयोगवाद-आधुनिकतावाद ने अपना वर्चस्व कायम किया। इसकी प्रतिक्रिया दिखी। लेखकों की नई कतार सामने आई। यह नवलेखन के दौर से जाना गया जिसके केंद्र में परंपरा से विद्रोह और व्यवस्था से विरोध था। नये लेखकों के अंदर अपने को अभिव्यक्त करने की छटपटाहट थी, वहीं साहित्य में उन्हें अपनी पहचान को दर्ज कराना था। बड़ी पत्रिकाओं की ओर मुखापेक्षी न होकर नये लेखकों ने इस दिशा में पहल ली। नतीजा यह हुआ कि छोटे-छोटे कस्बों, नगरों, यहां तक कि गांव तक से पत्रिकाएं निकलीं। छोटे आकार में निकलीं। ये बड़ी और सेठाश्रयी पत्रिकाओं के बरक्स निकली थीं, इसलिए इन्हें 'लघु पत्रिका' के नाम से जाना गया। इसने आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिया। तब से लघु पत्रिका आंदोलन ने करीब पांच दशक से अधिक की यात्रा पूरी कर ली है। इसे तीन चरणों में बांटा जा सकता है।

पहला चरण, जब इस आंदोलन की शुरुआत हुई। पत्रिकाओं के माध्यम से नए रचनाकार ही संपादक की भूमिका में आए। इनका मुख्य स्वर व्यवस्था विरोध का था। बदलाव की चाह इसके केंद्र में थी। पत्रिकाओं के प्रकाशन से लेकर संचालन में नए रचनाकारों की ज़िद, जुनून और जज्बा दिखाई देता है। साहित्य में उन्हें पहचान मिले, इसका भी यह संघर्ष था।

दूसरे दौर में वैचारिक प्रतिबद्धता और जन सरोकार का प्रश्न मूल था। न सिर्फ युवा रचनाकारों बल्कि उस दौर के प्रतिष्ठित रचनाकारों ने भी लघु पत्रिकाएं निकालीं और लघु पत्रिका आंदोलन को एक नई ऊंचाई प्रदान की। पत्रिकाओं की दिशा वाम और जनवादी थी और वे इसी नाम से जानी गईं। भैरव प्रसाद गुप्त, मार्कंडेय, ज्ञानरंजन, विष्णुचंद्र शर्मा, खगेन्द्र ठाकुर, नंदकिशोर नवल, सव्यसाची, डॉक्टर चंद्रभूषण तिवारी, रमेश उपाध्याय, चंद्रबली सिंह, विमल वर्मा, हरीश भदानी जैसे प्रतिष्ठित लेखक लघु पत्रिकाओं से जुड़े और आंदोलन को आगे बढ़ाया। समारंभ, उत्तरार्ध, कथा, पहल, वाम, विचार, सर्वनाम, सामयिक, अलाव, वातायन, युग परिबोध, सिर्फ, विनिमय, अभिव्यक्ति, इसलिए, पुरुष, युवालेखन, परिपत्र, जन संस्कृति, क्यों, आमुख, कलम, कथन आदि सहित सैकड़ों की संख्या में पत्रिकाएं इस दौर में निकलीं। इनमें से कुछ अभी भी निकल रही हैं। इनकी बड़ी भूमिका यह रही कि इसने साहित्य सृजन को कलावाद के बरक्स वाम और जनवादी दिशा प्रदान की। मजदूर-किसान-आमजन के जीवन व संघर्ष को साहित्य में केन्द्रीयता मिली। मार्क्सवाद मुख्य वैचारिक स्रोत बना। साहित्य में नए सौंदर्यशास्त्र की बहस तेज हुई।

तीसरे चरण का आरंभ हम 1990 के आसपास मानते हैं। यह दौर है जब नवउदारवाद के माध्यम से वित्तीय पूंजी की वैश्विक व्यवस्था सामने आई। यही वक्त है जब भारत की राजनीति, समाज, साहित्य आदि में भी बदलाव आया। साहित्य की जमीन भी बदली। नये विमर्श तथा स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, पर्यावरण जैसे विषय साहित्य के केंद्र में आये। बड़े पैमाने पर पूंजी, नई तकनीक आदि का पत्रकारिता व मीडिया में प्रवेश हुआ। उनका चरित्र बदला। चौथे स्तंभ की भूमिका लोकतंत्र की निगरानी की ना होकर पूंजी व सत्ता के चाकर की बनती गई। मीडिया 'गोदी मीडिया' बन गया। सोशल मीडिया की भूमिका भी बढ़ी। वह अभिव्यक्ति के नए मंच के रूप में उभरा। आज इसे भी नियंत्रित करने की कोशिश हो रही है। अभिव्यक्ति की आजादी पर हमले हुए। विचार की जगह बाजार ने प्रधानता ग्रहण की है।

इस दौर की अधिकांश पत्रिकाएं व्यक्तिगत प्रयासों से निकली हैं/ निकल रही हैं। लघु पत्रिका का चरित्र बदला है। अब वे 'लघु पत्रिका' से नहीं जानी जाती हैं। हाशिए के समाज की उपस्थिति और हस्तक्षेप से लोकतांत्रिक आकांक्षा प्रबल हुई है। प्रतिरोध का स्वर उभरा है। जनप्रतिबद्धता की जगह जनसरोकार का पहलू सामने आया है। पूँजी, सत्ता और बाजार ने नयी चुनौती पेश की है। पत्रिका निकालना आसान नहीं है। पहले भी नहीं था। अब और कठिन हुआ है। मुक्तिबोध के शब्दों में कहें 'कोशिश करो, कोशिश करो, जीने की, जमीन में गड़कर भी'। हमारी कोशिश कुछ ऐसी ही है। 'रेवान्त' के पीछे मुक्तिबोध की प्रेरणा और साहित्यिक पत्रकारिता की संघर्षशील धारा व परंपरा है। कठिनाइयां बहुत हैं। कब नहीं रही हैं? हमें अपने रचनाकरों, पाठकों और साथियों का भरोसा है। वे ही 'रेवान्त' की ताकत हैं।

पिछला साल मशहूर लेखक हरिशंकर परसाई का शताब्दी का था। परसाई जी ने व्यंग्य को साहित्य की गद्य विधा की नयी शैली के रूप में पहचान दी है। उसे ऊंचाई पर पहुंचाया है। इससे बहुत से रचनाकारों को व्यंग्यकार की पहचान मिली है। इस विधा की खासियत है कि वह वर्चस्ववादी धारा के विरुद्ध खड़ा होता है। ताकतवर व्यक्तियों, सत्ताओं, दकियानूस विचारों, सामाजिक विद्रूपताओं को निशाना बनाता है। उस पर कटाक्ष करता है। उसका क्रिटिक रचता है। हरिशंकर परसाई का लेखन इसी का अप्रतिम उदाहरण है।

'रेवान्त' के इस अंक में हरिशंकर परसाई पर कवि व आलोचक चन्द्रेश्वर का लेख है जिसमें उनका कहना है 'हरिशंकर परसाई का समस्त व्यंग्य लेखन स्वाधीन भारत के बाद के समय और समाज का न सिर्फ दस्तावेज एवं दर्पण है, बल्कि दीपक भी है।' इसी अंक में परसाई जी की एक कहानी 'सती का बेटा' भी दिया जा रहा है। रामकुमार कृषक शीर्ष रचनाकर हैं। इसी वर्ष छः खंडों में उनकी रचनावली आई है जिसका संपादन कथाकार महेश दर्पण ने किया है। कृषक जी की रचना यात्रा विशेष रूप से उनके गीतों व गजलों पर महेश दर्पण जी का आलेख हम प्रकाशित कर रहे हैं। इसके साथ जीवन सिंह का हिन्दी गजलों पर लेख है जो उसके सरोकार पर केन्द्रित है।

पिछले दिनों साहित्य की दुनिया के अनेक महत्वपूर्ण रचनाकरों को हमने खोया है। उनमें जनवादी गीतकार नचिकेता, कवि मलय, शायर मुन्नवर राना, पंजाबी कवि सुरजीत पात्तर, आलोचक प्रो चौथीराम यादव, जनवादी आलोचक परशुराम, जनवादी कवि कांति मोहन सोज आदि हैं। इनका सृजन और संघर्ष सामाजिक बदलाव और बेहतर दुनिया के लिए था। 'रेवान्त' की ओर से इनके प्रति गहरी संवेदना इस संकल्प के साथ कि 'कारवां चलता रहेगा, चलता रहेगा, बढ़ता रहेगा....यादों के साथ तेरे चलता रहेगा.....।'

– कौशल किशोर

'रेवान्त' का यह अंक....

'रेवान्त' का यह अंक करीब दो साल के अंतराल के बाद प्रकाशित हो रहा है। एक नहीं, कई समस्याएं रही हैं। दो मुख्य कारण हैं। पहला, कोरोना है। इस दौर में तमाम कोशिशों के बाद मात्र एक अंक 2022 में निकल पाया। कोरोना मानव जाति का अदृश्य शत्रु है। उसने मानव गतिविधियों को अस्त-व्यस्त-पस्त किया। वह बार-बार रूप बदलकर आक्रमण करता है। कभी कोविड-19, कभी डेल्टा, तो कभी ओमिक्रान। इसकी वजह से हमने अनेक प्रिय जनों को खोया। कोई भी ऐसा घर नहीं मिलेगा जहां मौत का मंजर ना देखा गया हो। हम उस दौर से आज निकल आए हैं। लेकिन वह कभी भी लौट सकता है। इसलिए हमारी सजगता आवश्यक है। इसने हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था को आइना दिखाया है। जो मौतें हुईं, वह दर्दनाक है। यदि स्वास्थ्य व्यवस्था चौकस होती तो शायद इतनी दुर्गति नहीं होती। हम बहुत सी जिंदगियां बचा सकते थे।

'रेवान्त' के प्रकाशन में बाधा का दूसरा कारण प्रेस है। पत्रिका की छपाई का संपूर्ण कार्य माया ग्राफिक्स प्रेस के हमारे साथी दिलीप कुमार जी की देखरेख में पिछले 10 वर्षों से होता रहा है। 2022 के अक्टूबर महीने में उन्हें गंभीर रूप से ब्रेन हेमरेज का आघात हुआ। यह पत्रिका के प्रकाशन में भी बड़ा आघात था। धीरे-धीरे दिलीप कुमार जी इस आघात से उबरने भी लगे। प्रेस में आना शुरू कर दिया। लेकिन उनकी स्थिति सामान्य नहीं थी। हम उनके स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार का इंतजार करते रहे । बाद में, दिलीप कुमार जी द्वारा अपनी असमर्थता जाहिर कर देने के बाद हमने विकल्प की तलाश शुरू की और अब एक नए प्रेस से रेवान्त के इस अंक का प्रकाशन हुआ। प्रयास है कि आगे से पत्रिका नियमित हो।

कुछ बातें देश और समाज की। आज एक नहीं अनेक मुद्दे हैं। पर्यावरण को ही लें। लॉकडाउन के दिनों में नदियों का जल, हवा, पानी, वातावरण सब स्वच्छ दिख रहा था। लेकिन लॉकडाउन के खत्म होते ही फिर वही हालत। प्रकृति अपना प्रकोप दिखा रही है। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा। जिंदगियां तबाह। पेड़ काटे जा रहे हैं, हरियाली खत्म की जा रही है और महानगरों में ऊंचे ऊंचे अपार्टमेंट बन रहे हैं। यह कैसा विरोधाभास कि जंगल कट रहे हैं और पौधे लगाए जा रहे हैं। प्रदूषित हवा में जीने के लिए लोग अभिशप्त हैं। सांस लेने के लिए ऑक्सीजन का संकट है। यह ज़हरीला वातावरण अनेक बीमारियों का घर है। इस मुद्दे पर सचेत होने की जरूरत है। क्या यह देश का मुद्दा है या बन पा रहा है ? क्या सरकार गंभीर है ?

देश की आजादी का 'अमृत महोत्सव' मनाया गया। प्रश्न है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी महिलाएं, बच्चियां दरिंदों से सुरक्षित हैं ? उन्नाव व हाथरस से लेकर मणिपुर में जो हुआ, वह बेहद दर्दनाक है। रूह कांप जाती है। बलात्कार होता है, पीड़िता झेलती है और दरिंदे बेशर्म होकर घूमते हैं। उत्तर प्रदेश की राजधानी में एक लड़की के चेहरे पर तेजाब फेंक दिया जाता है। ऐसी घटनाएं रोजी ही घटती हैं। हमें सुनने पढ़ने को मिलती है। लालच व प्रलोभन देकर लड़कियों को जाल में फंसाया जाता है, फिर उनके साथ बलात्कार किया जाता है। एक नहीं पांच पांच लोग करते हैं, मतलब गैंगरेप। प्रधानमंत्री हों या मुख्यमंत्री या कोई मंत्री, उनके द्वारा नवरात्रि में कन्या का पैर पूजा जाता है। क्या यह नाटक नहीं है ? 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा क्या नारा बनकर नहीं रह गया है ? सत्ताधारी पार्टियों में बहुत से ऐसे नेता हैं जिन पर ऐसे आरोप हैं। लेकिन उन्हें चुनाव में टिकट दे दिया जाता है। वे जीतकर संसद और विधानसभाओं में पहुंच जाते हैं। बीते दिनों दिल्ली में पहलवान खिलाड़ियों के साथ क्या हुआ ? उन्हें न्याय देने की जगह आरोपी को ही सरकार बचाने में लग गई। 'वी वान्ट जस्टिस' की आवाज गूंज रही है। पीड़िता को न्याय कब मिलेगा ? मुद्दे हैं तो सरकार की जवाबदेही है कि वह जनता की आवाज सुने। उसके मुद्दे हल हो। आखिरकार जनता ही सरकार को चुनती है। जनता के मुद्दे सरकार नहीं हल करेगी तो कौन करेगा ?

– अनीता श्रीवास्तव